तीन माह से आपरेशन का इंतजार

सड़क दुर्घटना में सोहराब की दाहिनी टांग में फ्रैक्चर हुआ था

● हरिकिशन शर्मा

मांडीखेड़ा (मेवात)। अल-आफिया अस्पताल के सामान्य वार्ड में पड़ा सोहराब एकटक कॉरिडोर की ओर देखता रहता है। मेवात के इस ट्रक ड्राइवर को उस दिन का इंतजार है जब वह अपने पैरों के बल खड़ा हो सकेगा। लेकिन उसका इंतजार बढ़ता जा रहा है।

जानकारी के अनुसार, सड़क दुर्घटना में सोहराब (30) की दाहिनी टांग में फ्रैक्चर हुआ था। निजी अस्पताल में सवा लाख रुपये खर्च करने के बाद सरकारी अस्पताल में भर्ती हुआ। लेकिन यहां भी तकलीफ दूर नहीं हुई। अब डाक्टर का कहना है कि उसे रोहतक जाना पड़ेगा, वहीं आपरेशन होगा। तब से वह बिल्कुल टूट गया है। आखिर सोहराब का आपरेशन हो भी तो कैसे। ओमान के सुल्तान की मदद से बने इस अस्पताल में बेहोशी का डॉक्टर नहीं है। पूरे जिले के निजी या सरकारी किसी भी अस्पताल में बेहोशी डॉक्टर नहीं है और पड़ोसी जिलों के डाक्टर मेवात आने को तैयार नहीं है।

बदहाल

मेवात के निजी और सरकारी अस्पतालों में बेहोशी का डॉक्टर नहीं

सरकारी कोशिशें डाक्टरों को मेवात में टिकाए रखने में नाकाम रही हैं

सोहराब की तरह तमाम मरीज आपरेशन के लिए राजस्थान, दिल्ली या गुड़गांव के अस्पतालों की ठोकर खाते हैं। अल्पसंख्यक बहुल जिले में न तो सर्जरी की सुविधा है न ही कोई स्पेशलिस्ट। यहां कोई गाइनाकॉलाजिस्ट भी नहीं है। सरकारी कोशिशें डाक्टरों को यहां टिकाए रखने में नाकाम रही है। यहां डाक्टरों को हर महीने 25,000 रुपये अतिरिक्त मिलते हैं फिर भी कोई स्पेशलिस्ट नहीं टिकता। डाक्टरों को इतना परहेज है कि वे नौकरी तक छोड़ देते हैं। अब भी 10 डाक्टर ड्यूटी से गायब हैं। सिविल अस्पताल, मांडीखेड़ा के सीएमओ के एस राव ने अमर उजाला से कहा, 'डाक्टरों के कुल 77 पद मंजूर हैं जिसमें से सिर्फ 57 की भर्ती हुई। इसमें से 10 बिना बताये छह माह से गायब हैं, सिर्फ 47 डाक्टर ड्यूटी पर हैं। यहां कोई भी गाइनाकालॉजिस्ट, पैथोलाजिस्ट, ब्लडबैंक, रेडियोलाजिस्ट, ईएनटी स्पेशलिस्ट नहीं है। स्पेशलिस्टों में सिर्फ बच्चों, हड्डी, आंख, त्वचा के डाक्टर है।' मात्र तीन डाक्टर महिलाएं हैं जो गुड़गांव से आती हैं। उपायुक्त सी आर राणा का कहते हैं, 'हम एक लाख तनख्वाह देने को तैयार हैं, बशर्ते स्पेशलिस्ट आयें तो सही। लोगों में मेवात के प्रति भ्रांतियां हैं जिसके कारण डाक्टर आने को तैयार नहीं है। निजी अस्पताल न होने के कारण भी लोगों को दिक्कतें हैं।' राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत यहां कुल 800 आशा वर्कर की जरूरत के मुकाबले मौजूद सिर्फ 315 हैं। मेवात ने अब तक 10 मंत्री दिये हैं लेकिन विकास के रूप में इनकी छाप दूर तक नजर नहीं आती। स्थानीय विधायक आफताब अहमद का कहना है कि सरकार मेवात में स्पेशलिस्ट बुलाने को उन्हें विशेष प्रोत्साहन दे रही है।